



भारत का राजपत्र The Gazette of India

असाधारण

EXTRAORDINARY

भाग II—खण्ड 3—उप-खण्ड (i)

PART II—Section 3—Sub-section (i)

प्राधिकार से प्रकाशित

PUBLISHED BY AUTHORITY

सं. 418]

नई दिल्ली, बुधवार, अगस्त 22, 2001/श्रावण 31, 1923

No. 418]

NEW DELHI, WEDNESDAY, AUGUST 22, 2001/SRAVANA 31, 1923

वित्त मंत्रालय

(आर्थिक कार्य विभाग)

अधिसूचना

नई दिल्ली, 22 अगस्त, 2001

सा.का.नि. 598(अ).—भारत के राजपत्र, असाधारण भाग-II, खंड 3, उप-खंड (i) में प्रकाशित भारत सरकार के वित्त मंत्रालय (आर्थिक कार्य विभाग) की अधिसूचना सं. सा.का.नि. 581(अ) तारीख 6 अगस्त, 2001 के पृष्ठ 5 पर प्ररूप 3 के अंत में निम्नलिखित टिप्पण अन्तःस्थापित किये जाएंगे, अर्थात् :—

“टिप्पण :—

1. प्ररूप, अंतरण प्ररूप पर हस्ताक्षर किए जाने की तारीख के पश्चात् एक कार्य दिवस के भीतर और व्यवस्थापन की तारीख को या इसके पूर्व भारतीय रिजर्व बैंक को प्रस्तुत किया जाना चाहिए, जिसके न हो सकने पर यह अस्वीकार किए जाने का दायी होगा।
2. प्ररूप में सभी अनुदेशों का अनुपालन किया जाना चाहिए जिसके न हो सकने पर प्ररूप अस्वीकार किए जाने का दायी होगा।
3. चालू लेखा, जो आदेश के अनुसार एसजीएल लेखा को नामित/उससे संबद्ध है, चलाया जाएगा।
4. रिपो संव्यवहारों की दशा में, यह प्ररूप उपरोक्त मद (ग) के अधीन दिए गए व्यौरों के अनुसार संव्यवहारों का पुनः क्रय करने के लिए समझा जाएगा।
5. संघटकों की ओर से संचालित संव्यवहारों को तत्काल प्रधान (एसजीएल) खाता धारकों के पास रखे गए संघटक के खाते में लाया जाना चाहिए।”

[फा. सं. 4(5)-पीडी/98]

डी. स्वरूप, अपर सचिव(बजट)

MINISTRY OF FINANCE

(Department of Economic Affairs)

NOTIFICATION

New Delhi, the 22nd August, 2001

G.S.R. 598(E).—In the notification of the Government of India in the Ministry of Finance, (Department of Economic Affairs), Number G.S.R. 581(E) dated 6th August, 2001 published in the Gazette of India, Extraordinary, Part II, Section 3, Sub-section (i), in Form III, in page 5, the following Notes shall be inserted at the end, namely :—

“Notes :—

1. The form should be submitted to RBI within one working day after the date of signing the transfer form and on or before the settlement date, failing which, it is liable to be rejected.
2. All the instructions in the form should be complied with, failing which the form is liable to be rejected.
3. The Current Account designated/linked to the SGL Account as per the mandate will be operated.
4. In case of REPO transactions, this form will be considered for effecting the repurchase leg of the transaction as per the details given under item (C) above.
5. The transactions conducted on behalf of the constituents should be given effect to in the constituents' account maintained with the principal (SGL Account holder) immediately.”

[F. No. 4(5)-PD/98]

D. SWARUP, Addl. Secy. (Budget)

